दुःख में कमी भी सुख की अनुभूती कराती है। मई की गर्मी में, भरी दोपहर में धूप में खडा रहने में सुख होता है? आप कहेंगे हो ही नही सकता। हाँजी, होता है। एक आदमी को धूप में खडा करके पीट रहे थे। बिचारा दुःख के मारे चिल्ला रहा था। थोडी देर बाद उसको मारना बंद कर दिया। अब उसको धूप में खडा होने पर भी सुख मिल रहा है। दुःख की कमी उसको सुख दे रही है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

इसके अलावा और कुछ है। किसी वस्तु या व्यक्ति में सुख की कल्पना मन में उसको प्राप्त करने की इच्छा निर्माण करती है। मन सुख पाने के लिए तब तक इच्छाएं पैदा करेगा जब तक आप हमेशा के लिए संतुष्ट नहीं हो जाते। ठीक है, अगर जो इच्छा पैदा की जाती है वह पूरी नही होती है, तो क्रोध पैदा होगा और आपको दुःखी करेगा। अगर वो इच्छा पूरी होती है तो लोभ पैदा होगा, क्योंकि मन उन वस्तुओं में आसक्त हो जाता है जो आपको सुख देती हैं। आप उस वस्तु को पाने के लिए कष्ट उठाएंगे। उस वस्तु को ठीक रखने के लिए कष्ट उठाएंगे। उस वस्तु को सुरक्षित रखने के लिए हर तरह के कष्ट उठाएंगे। और यदि वह वस्तु नष्ट होती है तो कष्ट ही कष्ट है।

जितना अधिक आप प्राप्त करते हैं, उतनी अधिक उस वस्तु को और पाने की इच्छा उत्पन्न होती हैं और उतनाही आप अधिक बेचैन हो जाते हैं, क्योंकि आपको इसे और अधिक इकट्ठा करने के लिए अधिक प्रयास करने पडते है। आप अधिक चिंतित हो जाते है। "अगर कोई इसे मुझसे छीन लेगा तो क्या होगा? ये खराब या नष्ट होगी तो क्या होगा?" सभी प्रकार के तनाव और भय विकसित होते हैं। कभी-कभी आप रातों की नींद खो देते हैं। संभावित प्रतिद्वंद्वी के लिए आपकी खोज शुरू हो जाती है। संदिग्ध व्यक्ति निर्दोष हो सकता है और उसकी आपके वस्तु में बिल्कुल भी दिलचस्पी नहीं हो सकती है। फिर भी आप मानते हैं कि आपको उसे आगे बढ़ने से रोकना चाहिए, क्योंकि यह निवारक उपाय नहीं करना जोखिम भरा होगा! अगर, समय के साथ, आप अपनी इच्छा पूरी करने में विफल हो जाते हैं, तो आप तनाव युक्त होते है। निराश हो जाते हैं या क्रोधित हो जाते है। आप बहुत परेशान हो जाते हैं, घबरा जाते हैं। आईए देखें कि

आपने कहां शुरू किया था और आप कहां पहुँचे है।

आपको थोडा बहुत भ्रामक सुख मिला लेकिन आप चिंताओं, तनावों, आशंकाओं से ग्रसित हो कर अशांत हो गये जबकि आप खुश होना चाहते थे।

क्या आपको लगता है कि आप वास्तव में बहुत स्मार्ट हैं? कुल मिलाकर, आप हारे हुए हैं क्योंकि आपको अवांछित भावनाओं का सामना करना पड रहा हैं। और इन सब प्रयासों में किये पापों को ईश्वर के कानून के अनुसार भुगतना पडेगा उसका क्या? नरक की पीड़ा के रूप में और चौरासी लाख योनीओं में दुखों के रूप में सजा ये एक और लाभ है! आप कहां पँहुच गये? आपको इस दुष्टचक्र से बाहर आना पडेगा। जितना अधिक विलंब करोगे, उतने ही अधिक प्रयास आपको इससे बाहर निकलने के लिए करने होंगे। यह अत्यंत पारदर्शी है कि मायिक सुख रूपी सैतान की चंगुल से बाहर आना होगा एवं मन को भगवान में लगाना होगा।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132